हिन्दी - पुष्प

(साउथ एशिया टाइम्स का हिन्दी परिशिष्ट)

वर्ष-६ अङ्क-७ फ़रवरी, २०१०

सम्पादकीय

ढाई अक्षर प्रेम का.....

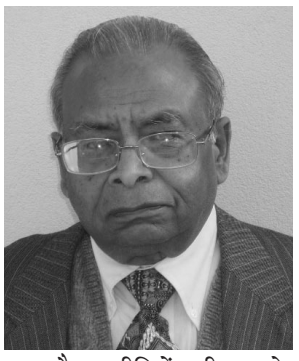

"पोथी पढ़ पढ़ जग मुआ,
पंडित भया न कोय
ढाई अक्षर प्रेम का
पढ़े सो पंडित होय" (कबीर)

संत कबीरदास ने जब यह लिखा तो वे 'वैलेटाइन-दिवस' की नहीं, भगवद्-प्रेम की बात कर रहे थे परंतु प्रेम के बारे में उनका कथन, प्रेम के हर रूप पर लागू होता है। प्रेम अनुभव करने की चीज़ है, इसे किताबी ज्ञान से नहीं प्राप्त किया जा सकता है। प्रेम में इतनी शक्ति होती है कि वह भगवान को भी भक्त के पास खींच लाती है। भक्ति-मार्ग इसी धारणा पर आधारित है। प्रेमी अपनी प्रेमिका के लिये सब कुछ न्योछावर करने को तैयार रहता है। प्रेम में त्याग की भावना होती है। सब कुछ दे देने की भावना होती है, लेने की नहीं। सूफ़ी-काव्य में इसका अच्छा वर्णन मिलता है।

आज मनुष्य ने स्वयं को विभिन्न धर्मों, जातियों और वर्गों में बाँट लिया है और भिन्न-भिन्न कारणों से एक-दूसरे के विरुद्ध युद्ध लड़ रहा है, आतंकवाद फैला रहा है। कबीरदास जी ने हिन्दू और मुसलमान दोनों धर्मों के अनुयायियों को फटकारा और कुरीतियों की आलोचना की और उन्हें प्रेमपूर्वक मिल-जुल कर रहने का संदेश दिया। यदि आप किसी से सच्चा प्रेम करते हैं तो आपको उसका दुगना प्रेम वापस मिलता है। इसलिये, यदि मानव एक-दूसरे से प्रेम करना सीख ले तो विश्व में सब कहीं युद्ध और आतंकवाद के स्थान पर शांति व सद्भावना दिखायी देगी। गांधी जी और ईसामसीह ने भी सब को प्रेम का संदेश दिया था। होली का त्योहार भी हम सबको मिल-जुल कर रहने की प्रेरणा देता है। आप सबको वैलेंटाइन-दिवस तथा होली की बधाई।

हिन्दी-पुष्प के इस अङ्क में कुछ रोचक कविताएँ हैं। इसके अतिरिक्त वी०सी०ई० हिन्दी तथा बसंत के बारे में दो लेख हैं और 'पदोन्नति' नामक कहानी का तीसरा भाग है। साथ में 'अब हँसने की बारी है' तथा 'सूचनाएँ' स्तम्भ भी हैं। आशा है आपको यह अङ्क पसंद आएगा। आपके विचारों, सुझावों तथा रचनाओं का हम स्वागत करेंगे।

-दिनेश श्रीवास्तव

लेखकों से निवेदन

१. कृपया अपनी रचनाएँ (कहानियाँ, कविताएँ, लेख, चुटकुले, मनोरंजक अनुभव आदि) निम्नलिखित पते पर भेजे -

डा० दिनेश श्रीवास्तव, १४१ हायट स्ट्रीट. रिचमंड, विक्टोरिया ३१२१

(Dr. Dinesh Srivastava, 141 Highett Street, Richmond, Victoria 3121)

२. हस्तलिखित रचनाएँ स्वीकार की जाएँगी परन्तु इलेक्ट्रानिक रूप से हिन्दी-संस्कृत फ़ांट मे रचनाएँ भेजे तो उनका प्रकाशन हमारे लिए अधिक सुविधाजनक होगा।

ई-मेल से रचनाएँ भेजने का पता है-

dsrivastava@optusnet.com.au

३. अपनी रचनाएँ भेजते समय अपनी रचना की एक प्रतिलिपि अपने पास अवश्य रखे।

काव्य-कुंज

नूतन वर्ष अभिनंदन तेरा

- पराशर गौर, कनाडा

अभिनंदन, अभिनंदन, नूतन वर्ष तेरा
जय हो, जय हो, जय-जय-जय हो तेरी
मूलभूत कामना, कामनाओं पर हो
अनंत, अनंत दिव्य-दृष्टि तेरी....!

जीत हृदय उनका,
जो विध्वंसक हैं
दे दिशा उनको,
दिशाहीन है मति जिन की

भू, नभ, जल-थल, दिशा, दिशाओं में
बयार चले बस सोच-समझ
और प्रेम-प्यार की
मानव के उर में जगें बीज प्यार के
साक्षी समय रहे,
बस यह है विनती मेरी.....!

अहम्- अहंकार द्वेष, ईर्ष्या,
तमस की तम से
न छुए दामन, तार कर कोई इसका
मानवता न मरे,
न मरे जीवन की अभिलाषा
मिटाने पर न मिटे,
गौरवपर्ण इतिहास है जिस का
अभिनंदन, अभिनंदन, है तेरा
जय हो, जय हो, जय-जय, जय हो तेरी!

पर्वतराज हिमालय से सागर तट तक
अमन और शांति का साम्राज्य रहे
न करे खंडित कोई धर्म,
विचारों व मानव को
रामराज्य बस यों ही बना रहे
न खींचे नफ़रत की रेखा
कोई न लहू बहे
प्रभु मानव पर ऐसी कृपा रहे तेरी...!

नया वर्ष का नया दिन

-राजेन्द्र चोपड़ा, मेल्बर्न

नए वर्ष का नया दिन
सुबह जगा और घूमा, टहला
घर के बाहर की बगिया में
सूरज की पहली किरणों के संग
दिल बोला, खुशी की किरणें
चमकें सब की जीवन-बगिया में
हरी घास पर बारिश की बौछार
पुलकित मन बोला सुंदर अति बहार
प्रभु ऐसी हरियाली से भर दो सब संसार
बीजों से फूटे सब्ज़ी की क्यारी
पौधों की छोटी हरी पत्तियाँ निहारी
हर जीव पर ईश हो ऐसी महिमा तिहारी

फूलों के पौधों की डालियों पर देख
पंखुड़ियाँ फूलों की
गुँधी एक सी लगातार
मन के अंतरतम को छू करें गद्गद
भाँति-भाँति के रंगो का सुंदर मिलन
ऐसे ही रब मिल जियें सब धर्म मिशन
मिटा कर भेद
हिंदू मुसलिम और क्रिश्चयन

फलों से पेड़ों की टहनियाँ लदी झुकीं
करिश्मा ऐसा देखने को
मिलता कभी-कभी
चहुँ ओर शांत मौन-वातावतण का नज़ारा
पंछी चहकते,
करते फल पकने का इंतज़ार
साल के हर दिन राजन
शुभ काम किए निरंतर
कर्म फल मीठा ही होगा
मिटेगा अज्ञान अंधकार

बसंत

- शोभना चौरे, भारत

शीत की कोठरी के द्वार से
अंधेरे को उजाले में लाया है बसंत।
महकती कलियों के लिये भौरों का,
प्रेम संदेश लाया है बसंत॥

पीले से मुख पर बसंती आभा,
बिखेरता हुआ आया है बसंत।
किसानों के लिये फ़सलों की सौगात
ले कर आया है बसंत॥

जीवन को जीवन देने
फिर से आया है बसंत।
और विद्यार्थियों के लिए,
देवी माँ सरस्वती का वरदान
ले कर आया है बसंत॥

अनमोल

- हेमानी 'किरण', मेल्बर्न

घनघोर काली रात में,
वह लौ, जो राह दिखाती है
डूबा हो जब अस्तित्व निशा में,
वह बात जो आस जगाती है,
जब छाई हो चुप्पी अंत:करण में,
वह ध्वनि जो बवंडर उठाती है,
जब हो जाते हैं चेहरे सब पराये,
रिश्तों की हर डोर छूट जाती है
और मन की एकांतता,
हृदय में भी जा समाती है
तब उस ऊँचे मंदिर की घंटी
जो अश्रु-स्राव जगाती है,
कैसे मूल्यांकन हो सकता है
उस मुस्कान का,
जो एक नन्हे मुख को सजाती है!

श्याम तन-मन समाए

- इंदुमती पाण्डेय, मेल्बर्न

सखी! श्याम बन प्राण, तन-मन समाए।
शरण आए को क्यों न अपना बनाए॥

बनाया मेरे तन को गोकुल की नगरी।
मेरी पाँच सखियाँ, जगें बन कर प्रहरी॥
बना कर मेरा मन वृन्दावन बसाए।
सखी! श्याम बन प्राण, तन-मन समाए॥

त्रिविध ताप शीतल, हुए बन त्रिवेणी॥
खुलीं बंद सारी, दिशाओं की वेणी॥
सखी! हर्ष में कितने दीपक जलाए।
सखी! श्याम बन प्राण, तन-मन समाए॥

जगत ही को सच मान कर जी रही थी।
अमृत छोड़ कर मैं विष पी रही थी॥
प्रियतम बिना मुझे कौन जगाए।
सखी! श्याम बन प्राण, तन-मन समाए॥

सदा गूँजती बंसरी, धुन है प्यारी
करें रास मन में, वृंदावन मुरारी
मेरी पाँचों सखियाँ मेरे संग गाएँ
सखी! श्याम बन प्राण, तन-मन समाए॥

लेख

जीवन के रंग बसंत के संग

-रमेश दवे, मेल्बर्न

ऋतुराज बसंत सृष्टि के आदिकाल से मानव जीवन तो क्या समस्त प्रकृति को आनन्दित करता रहा है। मानव और पशुपक्षी ही नहीं पेड़-पौधे भी झूम उठते हैं। पतझड़ के बाद जब नयी कोपलें निकलने लगती हैं- आम्रकुंज से जब पीली-पीली मोहरें खिलने लगती हैं तब कोयलिया कुहुकने लगती है। हरे-भरे खेतों में जब पीली-पीली सरसों लहलहाती है तब किसान का मन-मयूर नाच उठता है। कवि इंदीवर ने फिल्म उपकार के लिये क्या खूब लिखा है-

"पीली-पीली सरसों फूली
पीली उड़े पतंग
पीली-पीली उड़ी चुनरिया
पीली पगड़ी के संग"

बसंती रंग त्याग और बलिदान का भी प्रतीक है। इसीलिए तो अमर शहीद सरदार भगत सिंह- 'मेरा रंग दे बसंती चोला' गाते हुए फाँसी के फंदे पर झूल गए। वैसे त्याग कभी व्यर्थ नहीं जाता। भक्त कवि रहीम ने इस बात को बड़े सुंदर शब्दों में कहा है-

"ऋतु बसंत जाचक भया -
हरषि दिया द्रुमपात
ताते नव पल्लव भया -
दिया दूर नहीं जात"

पतझड़ में पेड़ से पत्ते झड़ जाते हैं तो बसंत में नये पत्ते फिर से निकल आते हैं। वैसे ही त्याग व बलिदान भी बेकार नहीं जाता। आज हम आज़ाद हैं तो जाने-अनजाने उन तमाम शहीदों की वजह से जिन्हें स्वाधीनता से इश्क था। भारतीय संस्कृति की यह विशेषता रही है कि इसके सभी तीज-त्यौहार, ऋतुओं से जुड़े हैं। बसंत को ही लीजिये- जिसकी शुरुआत बसंत पंचमी से होती है। इस दिन हम ज्ञान और कला की देवी माँ सरस्वती की आराधना करते है जिनके एक हाथ में वीणा तथा दूसरे हाथ में पुस्तक होती है। उनका वाहन हंस है। वीणा कला की और पुस्तक ज्ञान की प्रतीक है लेकिन यह किताबी ज्ञान नहीं, व्यावहारिक ज्ञान होना चाहिए, ताकि हमारा दृष्टिकोण हमेशा सकारात्मक रहे। इसके लिए हमें संत-कवि तुलसीदास से प्रेरणा लेनी होगी-

"जड़, चेतन, गुण-दोषमय
विश्व कीन्ह करतार
संत हंस गुण गहहिं
पय-परिहरि वारि विकार"

अर्थात् हंस की तरह हम भी मोती चुगें, गुणग्राही बनें, दूसरों को दोष न दें। यह विचार हमें सदा खुश रखेगा। हम हर्ष-उल्लास से भरे रहेंगे होली. मन-मस्ती का पर्व है लेकिन यह तब संभव है जब हम राग-द्वेष और ईर्ष्या की होली जला कर परस्पर प्रेम और सदभावना का रंग उड़ाएँगे। इधर प्राकृतिक सौंदर्य मन को मतवाला बना देता है। यह नशा किसी शराब का नहीं, प्यार का नशा है जो कभी भी नहीं उतरता। बस चढ़ता ही चला जाता है-

"चढ़ के जो तुरंत उतर जाए
ऐसी हाला का पीना क्या
चढ़ के जो कभी नहीं उतरे
वह प्रेम-प्याला पिया करूँ"

ऐसे लोगों का जीवन सदाबहार हो जाता है और यही है संदेश बसंत का। तो क्यों न हम भी अपने-आपको बसंती रंग से सराबोर कर डालें ताकि हमारा जीवन आनन्दमय हो उठे।

वी०सी०ई० हिन्दी के मेरे अनुभव (भाग १)

-अमरप्रीत कौर
पेमब्रुक सेकेंडरी कॉलेज मुरूलबार्क वी० एस० एल० ब्लैकबर्न केन्द्र, विक्टोरिया

(हर वर्ष की भाँति, इस वर्ष भी हम उन विद्यार्थियों के लेख प्रकाशित कर रहे हैं, जिन्होंने वर्ष २००९ की १२वीं कक्षा की हिन्दी परीक्षा में ८० प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किये हैं। इस परीक्षा में, अमरप्रीत कौर ने सर्वोच्च अंक (९० प्रतिशत), केतन मिश्रा ने (८८ प्रतिशत) और जुही काफ़मैन ने ८० प्रतिशत अंक प्राप्त किये हैं। इनको तथा अन्य सभी वियार्थियों को, जिन्होंने वर्ष २००९ की वी०सी०ई० की हिन्दी परीक्षा उत्तीर्ण की है, हमारी ओर से बहुत-बहुत बधाई- सम्पादक)

सभ्यता, त्योहार, समाज में नारियों का स्थान जैसे सामाजिक विषयों का अध्ययन किया और इन विषयों के विभिन्न पहलुओं पर कक्षा में विचार विमर्श किया। कक्षा में शुद्ध हिंदी में वार्तालाप करने के कारण हिंदी के उच्चारण में बहुत सुधार आया। मैं अपनी अनुभवी शिक्षिका श्रीमती मनजीत ठेठी तथा शिक्षक श्रीमान ठेठी की बहुत आभारी हूँ जिनका सहयोग व मार्गदर्शन हर विद्यार्थी को हिंदी पढ़ने के लिये प्रोत्साहित करता है। हिंदी भाषा भारत की राजभाषा है। इसके अध्ययन के दौरान मैंने स्वयं को अपनी संस्कृति व भाषा से जुड़ा हुआ महसूस किया। मैं अपने माताजी व पिताजी की भी बहुत आभारी हूँ जिन्होंने मुझे अपने व्यस्त जीवन में से समय निकाल कर हर पल मेरा मार्गदर्शन किया और कभी मुझे हतोत्साहित नहीं होने दिया। अपनी मातृभाषा हिंदी को जीवित रखने व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी को अपना उच्च स्थान बनाये रखने में, मैं अपना सहयोग देना चाहूँगी। आने वाले विद्यार्थियों को एक ही सलाह दूँगी कि वे हिंदी भाषा का अध्ययन हृदय से करें और याद रखें कि अपनी मातृभाषा का ज्ञान प्राप्त करना व इसे आगे बढ़ाना हमारा कर्तव्य है।

भारत से ऑस्ट्रेलिया आये मुझे ४ महीने ही हुए थे कि विक्टोरियन स्कूल आफ लैंग्वजेज़ द्वारा संचालित हिंदी कक्षाओं की जानकारी प्राप्त हुई। हिंदी की कक्षा में बहुसांस्कृतिक विद्यार्थियों के साथ ३ घंटे कैसे बीत जाते थे, पता ही नहीं चलता था। यहाँ का मुक्त वातावरण मुझे बहुत अच्छा लगा। मैंने देखा कि ऑस्ट्रेलिया की शिक्षा प्रणाली भारतीय प्रणाली से बहुत अलग है। प्रायोगिक स्तर पर अध्ययन के विषय, बहुत उपयोगी थे। मैंने वी० सी० ई० हिंदी कक्षा में देशांतरण, भारतीय

कहानी

पदोन्नति* (भाग ३)

-श्रीनिवास वत्स

(आपने इस कहानी के पिछले भागों में पढ़ा कि सुनन्दन बाबू और उनका परिवार उनकी पदोन्नति से बहुत प्रसन्न थे। वे 'हिंदी अनुवादक' से 'हिंदी अधिकारी' बन गये थे। घर में एक स्कूटर भी आ गया था। शहर के प्रतिष्ठित लायंस क्लब की सदस्यता के लिये सुनन्दनजी ने आवेदन कर दिया। वे सुबह छह बजे उठकर सैर करते हुए महावीर पार्क पहुंच जाते, जहाँ शहर के प्रतिष्ठित व्यक्ति एकत्र होते थे। वहाँ उनकी भेंट रिटायर्ड मेजर कृष्णामूर्ति तथा सरोधा जी से हुई जो एक फाइनेंस कम्पनी में उपप्रबंधक थे। ये दोनों अपने-अपने कुत्तों को टहलाने लाये थे। सुनन्दनजी ने अपना परिचय दिया और उन्हें अपने घर आने का निमंत्रण दे दिया। लीजिये, अब आगे की कहानी पढ़िये - सम्पादक)

आज एक बात उन्होंने विशेष रूप से नोट की कि अफसरों के पास अक्सर कुत्ते अवश्य मिलते हैं। सुबह घूमने जाते हैं तो गले में चेन डाल कर साथ-साथ रखते हैं। अवश्य यह बड़प्पन की निशानी है। फिर कुत्ता कोई बुरा जानवर तो नहीं। कृष्णामूर्ती के अलशेसियन कुत्ते ने उनका मन मोह लिया था। उन्होने भी कुत्ता पालने का मन बना लिया। सोचा घर में थोड़ी-बहुत जूठन तो बच ही जाती है, उसी को खाकर पेट भर लेगा। इससे मोहल्ले में हमारी इज़्ज़त बढ़ेगी।

अगले दिन बात-बात में उन्होंने मेजर से पूछ लिया कि उन्हें यह कुत्ता कहाँ से मिला?

"हमारे एक कर्नल थे, उनसे तीन हज़ार रुपये में खरीदा था। इसके खाने में प्रतिदिन पैंतीस रुपये ख़र्च आता है।" मेजर ने बताया।

सुनन्दन जी ने सुना तो उत्साह ढीला पड़ गया और कुछ दिनों के लिये कुत्ता पालने के विचार को स्थगित कर दिया।

(क्रमश:)

महत्वपूर्ण तिथियाँ

१२ फ़रवरी (महाशिवरात्रि), १४ फ़रवरी (वैलेन्टाइन-दिवस / चीनी नव-वर्ष), १५ फ़रवरी (बुद्ध निर्वाण-दिवस), १७ फ़रवरी (ईसाइयों के ४० दिवसीय व्रत 'लेंट' का आरंभ), २६ फ़रवरी (पैग़म्बर मुहम्मद का जन्म दिन), २८ फ़रवरी (होलिका-दहन/ चीनी लालटेन का त्योहार), १ मार्च (रंग खेलने की होली), ११ मार्च (सिखों का त्योहार-होला-मोहल्ला), १६ मार्च (विक्रम-संवत २०६७ का आरम्भ), २४ मार्च (रामनवमी), २९ मार्च (हनुमान जयंती)।

सूचनाएँ

१. मर्चेन्टस् आफ़ बॉलीवुड का नृत्य कार्यक्रम (१७ फ़रवरी से २५ फ़रवरी तक)
स्थान - आर्टस् सेन्टर, स्टेट थियेटर, मेल्बर्न
समय - २० फ़रवरी को दोपहर २ बजे, अन्यथा ७-८ बजे शाम
अधिक जानकारी के लिये, फ़ोन कीजिये - १३०० १८२ १८३ या निम्नलिखित वेबसाइट देखिये- www.mechantsofbollywood.com.au

२. हिन्दू सोसायटी ऑफ़ विक्टोरिया द्वारा आयोजित - **होली उत्सव** (होलिका-दहन तथा रंग)
स्थान - श्री शिव-विष्णु मंदिर, ५२ बाउंड्री रोड, कैरम डाउन्स (मेलवे संदर्भ ९८ एफ़-१०)
तिथि व समय - रविवार, २१ फ़रवरी, सुबह ९ बजे से दोपहर के ४ बजे तक।
अधिक जानकारी के लिए मंदिर को (०३) ९७८२ ०८७८ अथवा श्री राम-प्रसाद को (०३) ९७९८-७७०४ अथवा (०४०४) ४८१-४७६ पर फ़ोन कीजिये

३. **ए०आई०आई०आई** प्रस्तुत करता है- **रंगों का त्योहार होली**
स्थान - सैंडडाउन रेस-कोर्स, मेल्बर्न (मेलवे संदर्भ ८० सी-९)
तिथि व समय - रविवार, २८ फ़रवरी, सुबह ११ बजे से शाम के ६ बजे तक।
अधिक जानकारी के लिए योगेन्द्र लक्ष्मण से (०४०३) ३३७ १४२ पर सम्पर्क कीजिये।

४. **साहित्य-संध्या** - अपने लोग, अपनी बातें (शनिवार, ६ मार्च)
स्थान - फ़िलिस होर रूम, क्यू सिटी लाइब्रेरी, कोथम रोड और सिविक ड्राइव के नुक्कड़ पर
क्यू-३१०१ (मेलवे संदर्भ ४५ डी-६)
समय - रात के ७.३० बजे से १०.३० बजे तक। प्रवेश नि:शुल्क है।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क कीजिये - नलिन शारदा (०४०२)१०८५१२
पिछली साहित्य-संध्या की बैठकों में ली गई फोटुओं तथा 'हिन्दी-पुष्प' के पुराने अंकों के लिये, निम्नलिखित वेबसाइट देखिये - http://sahityasangam. weebly.com /index.html

अब हँसने की बारी है

१. महिला और दंत-चिकित्सक

एक महिला बड़ी हड़बड़ी में दंत-चिकित्सक की क्लीनिक में पहुँची और दंत-चिक्त्सिक से बोली -
डाक्टर साहब, मैं बहुत जल्दी में हूँ मुझे एक ज़रूरी मीटिंग में जाना है, इसलिये बग़ैर सुन्न किये, जल्दी से दाँत निकाल दीजिये।
डाक्टर ने मन ही मन सोचा- यह तो कमाल की महिला है। फिर उस महिला से बोला -ठीक है जैसी आपकी मर्ज़ी। इस कुर्सी पर बैठ जाइये और बताइये कि किस दाँत में दर्द है।
महिला ने दरवाज़े के पास खड़े अपने पति को आवाज़ दी - "चलो डाक्टर साहब को दाँत दिखाओ।"

२. पति-पत्नी

एक झगड़ालू पत्नी पति पर बरस रही थी और वह बेचारा मुँह लटकाये खड़े हो कर सब सुन रहा था।
पत्नी कह रही थी - कायर कहीं के, तुम आदमी हो या चूहा?
पति गिड़गिड़ाया - श्रीमती जी, मैं आपका पति हूँ यदि चूहा होता तो आप थर-थर काँप रही होतीं।